हनोवर में जर्मनी की चांसलर के साथ संयुक्त संवाददाता सम्मेलन में प्रधानमंत्री का भाषण

दिनांक 23 अप्रैल, 2006
हनोवर, जर्मनी

मेरा और मेरे शिष्टमंडल का जिस गर्मजोशी के साथ स्वागत और आतिथ्य-सत्कार हुआ है उसके लिए मैं महामहिम चांसलर मर्केल तथा जर्मन सरकार का हृदय से आभार व्यक्त करता हूं।

भारत और जर्मनी के बीच बहुत अच्छे द्विपक्षीय संबंध हैं और दोनों ही देश अपनी सामरिक भागीदारी को मजबूत करने की दिशा में सक्रियता से काम कर रहे हैं। मेरी यह यात्रा इस बात को दर्शाती है कि हम विभिन्न द्विपक्षीय और अंतरराष्ट्रीय मुद्दों पर आपसी समझ बढ़ाने तथा उसे और अधिक मजबूत करने हेतु चांसलर मर्केल के नेतृत्व में जर्मनी के साथ काम करने में कितनी रुचि दिखा रहे हैं और इसके लिए कितने प्रतिबद्ध हैं।

जैसा कि चांसलर महोदया ने बताया है, हमने अपने द्विपक्षीय संबंधों पर बहुत ही सार्थक चर्चा की। हमने क्षेत्रीय मुद्दों और मौजूदा अंतरराष्ट्रीय स्थिति के बारे में भी विचारों का आदान-प्रदान किया। मैं मानता हूं कि इनसे हमें इन सभी मुद्दों पर एक-दूसरे के दृष्टिकोण को बेहतर ढंग से समझने में मदद मिली है।

जर्मनी हमारे सबसे बड़े व्यापारिक भागीदारों में से एक है और इसने भारत में भारी निवेश किया है। कई भारतीय कंपनियां भी जर्मनी में अपने कारोबार को बढ़ा रही हैं। भारतीय अर्थव्यवस्था में तेजी से हो रहे विकास ने दोनों देशों के बीच आर्थिक संबंधों को नई दिशा देने के महत्वपूर्ण अवसर प्रदान किए हैं।

हनोवर व्यापार मेला, जिसमें भारत एक सहयोगी देश के रूप में शिरकत कर रहा है और कल होने जा रही भारत-जर्मन व्यापार शिखर बैठक से हमारा आर्थिक सहयोग विशेषकर विनिर्माण और बुनियादी ढांचे जैसे क्षेत्रों में, और अधिक बढ़ेगा।

ऊर्जा के क्षेत्र में, हम उच्च स्तरीय भारत-जर्मन ऊर्जा मंच की स्थापना का स्वागत करते हैं, जिसमें दोनों सरकारों और सार्वजनिक तथा निजी क्षेत्रों

की भागीदारी शामिल होगी। इस मंच की स्थापना से दोनों देशों को ऊर्जा के कारगर उपयोग, स्वच्छ कोयला प्रौद्योगिकी तथा अक्षय ऊर्जा के क्षेत्रों में व्यावहारिक सहयोग बढ़ाने में मदद मिलेगी।

भारत और जर्मनी के बीच विज्ञान और प्रौद्योगिकी है के क्षेत्र में स्थाई सहयोग है। हमारे बीच इस बात पर सहमति बनी है कि हम दिल्ली में संयुक्त रूप से वित्तपोषित भारत-जर्मन विज्ञान केन्द्र की स्थापना के लिए सक्रिय होकर कार्य करेंगे।

आतंकवाद पर भारत और जर्मनी दोनों एक समान दृष्टिकोण रखते हैं। भारत कई वर्षों से आतंकवाद से पीड़ित रहा है। हम जर्मनी की इस बात के लिए सराहना करते हैं कि वह आतंकवाद पर भारत के रुख को समझता है। हम आतंकवाद से लड़ने के लिए हमेशा आपसी सहयोग की आशा रखते हैं।

दोनों देशों का एक सहयोगपूर्ण तथा नियमों पर आधारित बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था के प्रति एक समान दृष्टिकोण भी है। हमने चर्चाओं के दौरान संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में सुधार और उसके विस्तार हेतु जी-4 देशों के दायरे में प्रयास जारी रखने के अपने संकल्प को दोहराया क्योंकि इसके बगैर संयुक्त राष्ट्र का समग्र सुधार अधूरा रह जाएगा।

मैंने चांसलर मर्केल को अगले वर्ष भारत आने का निमंत्रण दिया है ताकि वार्षिक शिखर बैठकों की परम्परा को जारी रखा जा सके। मैं सामरिक भागीदारी को आगे बढ़ाने के लिए इनके साथ मिलकर काम करने की उम्मीद करता हूं।

******